राजस्थान पत्रिका, 23 अक्टूबर, 2017

खेल इंजीनियरिंग पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आज से

पिलानी @ पत्रिका. बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी एण्ड सांइस (बिट्स) के तत्वावधान में खेल इंजीनियरिंग विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन जयपुर में सोमवार से किया जा रहा है। सम्मेलन का उद्देश्य खेलों को इंजीनियरिंग से जोड़ कर खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं मुहैया करवाना है। संस्थान के मीडिया प्रभारी ने बताया कि सम्मेलन का आयोजित बिट्स पिलानी, फेडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री (फिक्की) तथा इंटरनेशनल स्पोस्टर्स इंजीनियरिंग एसोसिएशन यूके के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। उन्होने बताया कि सम्मेलन का आयोजन जयपुर स्थित बिरला सभागार में पर्यावरण एवं खेल मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के आतिथ्य में होगा।

सीमा सन्देश, 22 अक्टूबर, 2017

इंजीनियरिंग पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन कल से

पिलानी। खेल में प्रौद्योगिकी के महत्व को ध्यान में रखते हुए बिट्स पिलानी परिसर, फेडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) और इंटरनेशनल स्पोर्ट्स इंजीनियरिंग एसोसिएशन (आईएसईए, यूके) के साथ मिलकर संयुक्त रूप से खेल इंजीनियरिंग पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 23-25 अक्टूबर को बिरला सभागार, जयपुर मे कर रहे हैं। मुख्य अतिथि गजेन्द्र सिंह खींवसर, पर्यावरण एवं खेल मंत्री इस सम्मेलन को शुभारंभ करेंगे। खेल के महत्व और परिमाण में भारी वृद्धि हुई है। खेल, जैसा कि आज हम जानते हैं, शायद ही तकनीक से अलग हो सकते हैं विभिन्न विषयों से ज्ञान का अंतरण और एकीकरण दोनों प्रशिक्षण और प्रतियोगिता के लिए महत्वपूर्ण है। सभी स्तरों पर खेल में सफल होने के लिए मानक सुविधाएं और उपकरणों के आवश्यक पूर्व-आवश्यकताएं हैं। प्रतिस्पर्धा के लिए एथलीटों को तैयार करने के लिए टीमों द्वारा उपयोग किए गए प्रशिक्षण समर्थन के लिए प्रतियोगिता में एथलीटों द्वारा उपयोग किए जाने वाले उपकरण के लिए नए खेल, सुविधाओं से लेकर उपकरणों तक के विभिन्न तरीकों से प्रौद्योगिकी की भूमिका विभिन्न तरीकों से देखी जा सकती है और यह भी स्पष्ट है कि तकनीक और तकनीकी तरीकों को अपनाने में कार्यरत

प्रक्रियाओं ने प्रत्येक ओलंपियाड के साथ त्वरित सफलता प्राप्त की है। इसलिए, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अन्य सभी पहलुओं की प्रगति के रूप में खेल के लगभग हर पहलू पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव है। दुनिया में भारत की तीसरी सबसे बड़ी वैज्ञानिक और तकनीकी जनशक्ति है, लेकिन खेल और फिटनेस में इसका योगदान काफी कम है। नतीजतन, हमें आयातित उपकरण और प्रौद्योगिकी पर निर्भर रहने को मजबूर किया जाता है जो कि महंगे हैं और साथ ही भारतीय खेल व्यक्तियों के सामान्य शरीर क्रिया विज्ञान के लिए तैयार नहीं हैं। भारत में खेल और इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी के बीच काफी बड़ा अंतर है। यह महत्वपूर्ण कारणों में से एक है जो हमें भारत के खेल के विकास के लिए प्रेरित करता है। स्वास्थ्य, मनोरंजक, सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हमें खेलों के विकास के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण होना चाहिए। भारत में खेल सुधारने के लिए हमें अपनी तकनीक और सस्ती विनिर्माण और सुविधाओं के निर्माण की जरूरत है यह भारत में खेल के सबसे अधिक और आगे दिखने वाले मुद्दों को जानने के लिए एक मंच पर खेल शिक्षाविदों, इंजीनियरों और उद्योग के पेशेवरों को एक साथ लाने के लिए एक तर्कसंगत मामला बना देता है। खेल में प्रौद्योगिकी के इन सब महत्वों को ध्यान में रखते हुए बिट्स पलानी ने खेल इंजीनियरिंग के बारे में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन करने के लिए पहल की है ताकि खेल और इंजीनियरिंग के बीच अंतर को कम किया जा सके ताकि खेल के विशेषज्ञ विशेषज्ञों के लिए खेल से संबंधित मुद्दों पर विचार-विमर्श किया जा सके प्रौद्योगिकी में समुदाय सम्मेलन में एरो और हाइड्रोडायनामिक्स, एथलीट, सुविधा रखरखाव और खेल प्रदर्शन, खेल वस्त्र, खेल विश्लेषिकी और डेटा विज्ञान, आभासी वास्तविकता और पहनने योग्य तकनीक आदि के लिए उपकरणों के विश्लेषण और अनुकरण शामिल होंगे।खेल इंजीनियरिंग - एक ऐसा क्षेत्र है जो खेल के उपकरणों और सुविधाओं के डिजाइन और उत्पादन, प्रदर्शन माप और बायोमैकेनिक्स पर ध्यान केंद्रित करता है-विज्ञान और इंजीनियरिंग के अन्य क्षेत्रों, जैसे गणित, भौतिक विज्ञान और सिविल, मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, को ओवरलैप करता है। भारत में, खेल प्रबंधन और खेल विज्ञान में अधिक पाठ्यक्रमों की पेशकश की जा रही है। जब तक खेल में इंजीनियरिंग और तकनिकी का प्रयोग नहीं करगें, हम भारत में खेलने के स्तर में सुधार नहीं कर सकते।